गाथा 1 : मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

- जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
- जिनके सदा गुणरूपी रत्नों के भूषणों का उदय रहता है,
- ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
- जीव की प्ररूपणा को कहूंगा ।

संजलणणोकसायाणुदओ मंदो जदा तदा होदि। अपमत्तगुणो तेण य, अपमत्तो संजदो होदि॥45॥

- अर्थ - जब संज्वलन और नोकषाय का मन्द उदय होता है तब सकल संयम से युक्त मुनि के प्रमाद का अभाव हो जाता है। इस ही लिये इस गुणस्थान को अप्रमत्तसंयत कहते हैं।
- इसके दो भेद हैं - एक स्वस्थानाप्रमत्त, दूसरा सातिशयाप्रमत्त ॥45॥

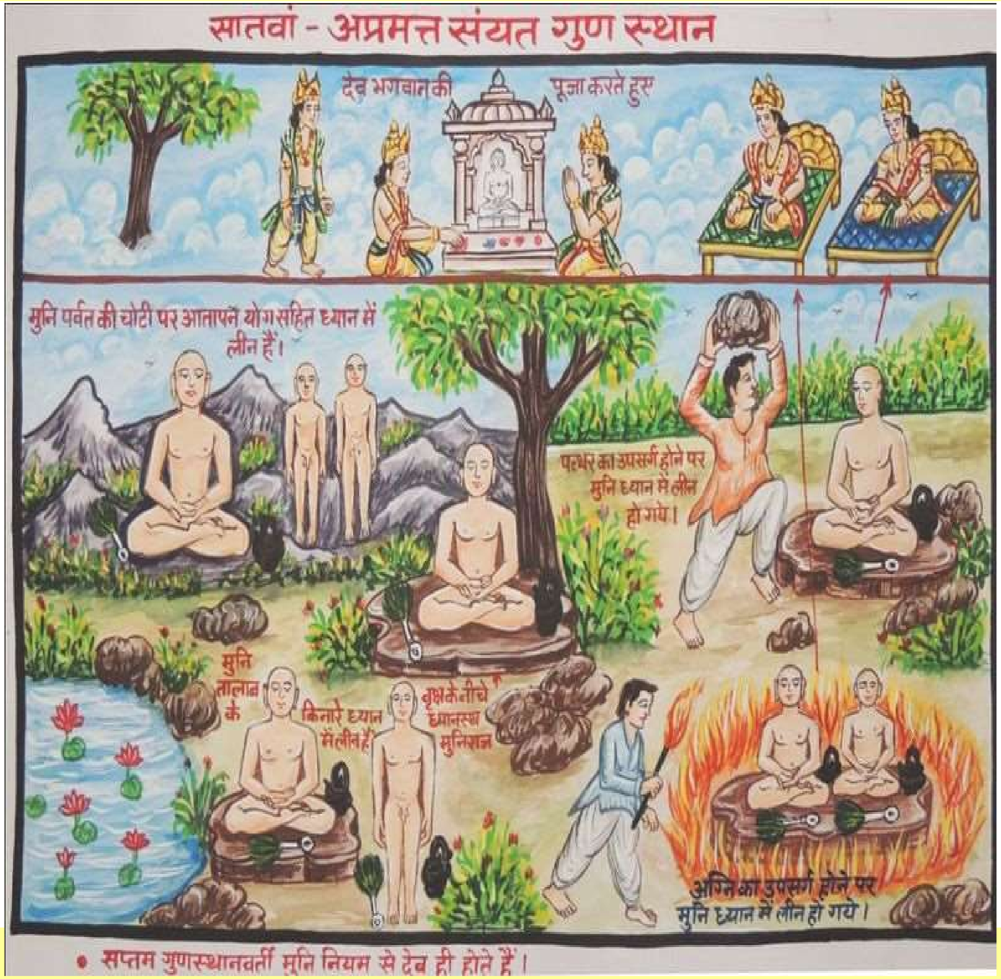

मुनि जीवन का प्रथम गुणस्थान

छठवाँ तो गिरने पर प्राप्त होता है

अप्रमत्त-विरत

परिणाम

- प्रमाद का अभाव
- सकल संयमयुक्त मुनि

निमित्त

- संज्वलन और नोकषाय का मंद उदय
- ३ कषाय चौकड़ी का अनुदय

णट्ठासेसपमादो, वयगुणसीलोलिमंडिओ णाणी।
अणुवसमओ अखवओ, झाणणिलीणो हु अपमत्तो॥46॥

- अर्थ - जिस संयत के सम्पूर्ण व्यक्ताव्यक्त प्रमाद नष्ट हो चुके हैं, और
- जो समग्र ही महाव्रत, अट्ठाईस मूलगुण तथा शील से युक्त है,
- शरीर और आत्मा के भेदज्ञान में तथा मोक्ष के कारणभूत धर्म्यध्यान में निरन्तर लीन रहता है,
- ऐसा अप्रमत्त मुनि जब तक उपशमक या क्षपक श्रेणी का आरोहण नहीं करता तब तक उसको स्वस्थान अप्रमत्त अथवा निरतिशय अप्रमत्त कहते हैं ॥46॥

7 वां गुणस्थान

- **स्वस्थान अप्रमत्त विरत**
  - जिसमें जीव 6 – 7 वे गुणस्थान में गमनागमन करता है
- **सातिशय अप्रमत्तविरत**
  - जिसमें जीव श्रेणी आरोहण करता है

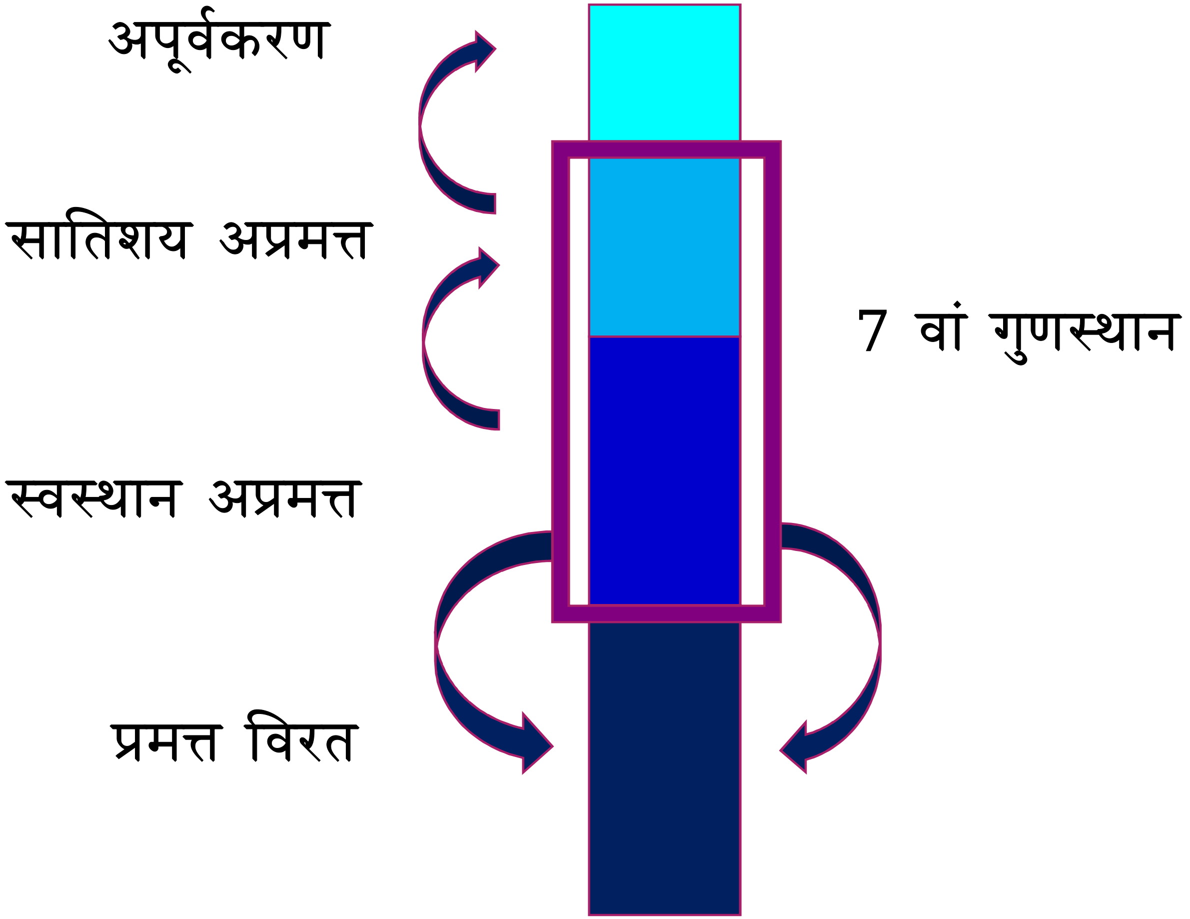

अपूर्वकरण
सातिशय अप्रमत्त
स्वस्थान अप्रमत्त
प्रमत्त विरत
7 वां गुणस्थान

इगवीसमोहखपणुपसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं।
पढमं अधापवत्तं, करणं तु करेदि अपमत्तो॥47॥

- अर्थ - अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन सम्बन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ इस तरह बारह और नव हास्यादिक नोकषाय कुल मिलकर मोहनीय कर्म की इन इक्कीस प्रकृतियों के
- उपशम या क्षय करने को आत्मा के ये तीन करण अर्थात् तीन प्रकार के विशुद्ध परिणाम निमित्तभूत हैं - अध:करण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण।
- उनमें से सातिशय अप्रमत्त अर्थात् जो श्रेणि चढ़ने के लिये सम्मुख या उद्यत हुआ है वह नियम से पहले अध:प्रवृत्तकरण को करता है ॥47॥

श्रेणी क्या?

- श्रेणी अर्थात् चारित्र मोहनीय की 21 प्रकृतियों के उपशम या क्षय में निमित्तभूत वृद्धिंगत वीतराग परिणाम

उपशम श्रेणी	क्षपक श्रेणी
21 प्रकृतियों का उपशम	21 प्रकृतियों का क्षय
8, 9, 10, 11 गुणस्थान	8, 9, 10, 12 गुणस्थान

क्षायिक सम्यग्दृष्टि मुनिराज उपशम श्रेणी या क्षपक श्रेणी आरोहण कर सकते हैं । उपशम सम्यग्दृष्टि मुनिराज उपशम श्रेणी ही आरोहण कर सकते हैं, क्षपक श्रेणी नहीं ।

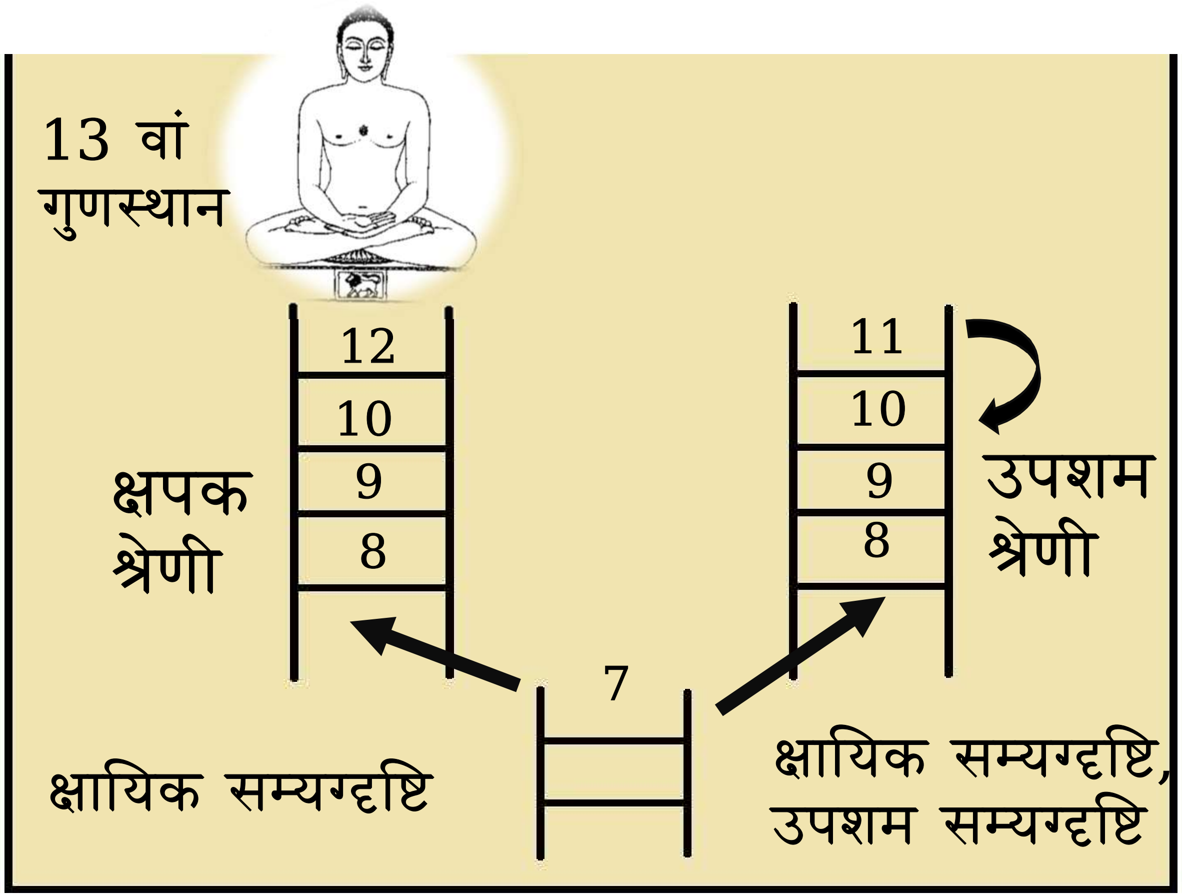

श्रेणी चढ़ने की विधि

अध: प्रवृत्तकरण प्रारंभ करते हैं।

विश्राम करके

दर्शन मोह का उपशम करें । **अथवा** दर्शन मोह की क्षपणा करें ।

फिर विश्राम करके

अनंतानुबंधी की विसंयोजना करके

क्षायोपशमिक सम्यक्त्वी अप्रमत्त संयत मुनिराज

अथवा

क्षायिक सम्यक्त्वी अप्रमत्त मुनिराज

अध:प्रवृत्तकरण करते हैं

जह्मा उवरिमभावा, हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति।
तह्मा पढमं करणं अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं॥48॥

अर्थ - अधःप्रवृत्तकरण के काल में से ऊपर के समयवर्ती जीवों के परिणाम नीचे के समयवर्ती जीवों के परिणामों के सदृश अर्थात् संख्या और विशुद्धि की अपेक्षा समान होते हैं, इसलिये प्रथम करण को अधःप्रवृत्त करण कहा है ॥48॥

तीन करण

अधःप्रवृत्तकरण	• जहाँ भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम समान भी हो सकते हैं और भिन्न भी हो सकते हैं
अपूर्वकरण	• जहाँ भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम भिन्न ही होते हैं
अनिवृत्तिकरण	• जहाँ समान समयवर्ती जीवों के परिणाम समान ही होते हैं

तीन करण एक जीव की अपेक्षा हैं या नाना जीवों की अपेक्षा?

- नाना जीवों की अपेक्षा

अन्तोमुहुत्तमेत्तो, तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।
लोगाणमसंखमिदा, उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया॥49॥

- अर्थ - इस अधःप्रवृत्तकरण का काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है
- और उसमें परिणाम असंख्यातलोक प्रमाण होते हैं,
- और ये परिणाम ऊपर-ऊपर सदृश वृद्धि को प्राप्त होते गये हैं ॥49॥

आवश्यक सूत्र

$$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}} = \text{चय}$$

$$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ} = \text{चयधन}$$

$$\text{सर्वधन} - \text{चयधन} = \text{आदिधन}$$

$$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}} = \text{आदि}$$

सर्वधन = 3072, गच्छ = 16, संख्यात = 3

चय	$\frac{3072}{16 \times 16 \times 3} = 4$
चयधन	$\frac{16 - 1}{2} \times 4 \times 16$ $= 15 \times 2 \times 16 = 480$
आदिधन	3072 – 480 =2592
आदि	$\frac{2592}{16} = 162$

अध:प्रवृत्त करण के परिणामों की रचना
(अंक संदृष्टि से)

16	222
15	218
14	214
13	210
12	206
11	202
10	198
9	194
8	190
7	186
6	182
5	178
4	174
3	170
2	166
1	162
समय	परिणामों की संख्या

कुल परिणाम = 3072

समय = 16

चय = 4

अनुकृष्टि रचना

अनुकृष्टि गच्छ	$= \frac{\text{ऊर्ध्व गच्छ}}{\text{संख्यात}} = \frac{16}{4} = 4$
अनुकृष्टि चय	$= \frac{\text{ऊर्ध्व चय}}{\text{अनुकृष्टि गच्छ}} = \frac{4}{4} = 1$
सर्वधन = 162, गच्छ = 4, चय = 1	
चयधन	$= \frac{4-1}{2} \times 1 \times 4 = 3 \times 1 \times 2 = 6$
आदिधन	$= 162 - 6 = 156$
आदि	$= \frac{156}{4} = 39$

- तो प्रथम समय संबंधी रचना ऐसे बनेगी ।

162 ➔	39	40	41	42

- ऐसे ही द्वितीय समय संबंधी रचना बनाइये ।

166 ➔	40	41	42	43

- ऐसे ही सारे समयों में बनाइये ।

16	222	54	55	56	57
15	218	53	54	55	56
14	214	52	53	54	55
13	210	51	52	53	54
12	206	50	51	52	53
11	202	49	50	51	52
10	198	48	49	50	51
9	194	47	48	49	50
8	190	46	47	48	49
7	186	45	46	47	48
6	182	44	45	46	47
5	178	43	44	45	46
4	174	42	43	44	45
3	170	41	42	43	44
2	166	40	41	42	43
1	162	39	40	41	42
समय	परिणामों की संख्या	अनुकृष्टि के खंड			

अध:प्रवृत्त करण के सर्व समयों की अनुकृष्टि रचना

अनुकृष्टि रचना

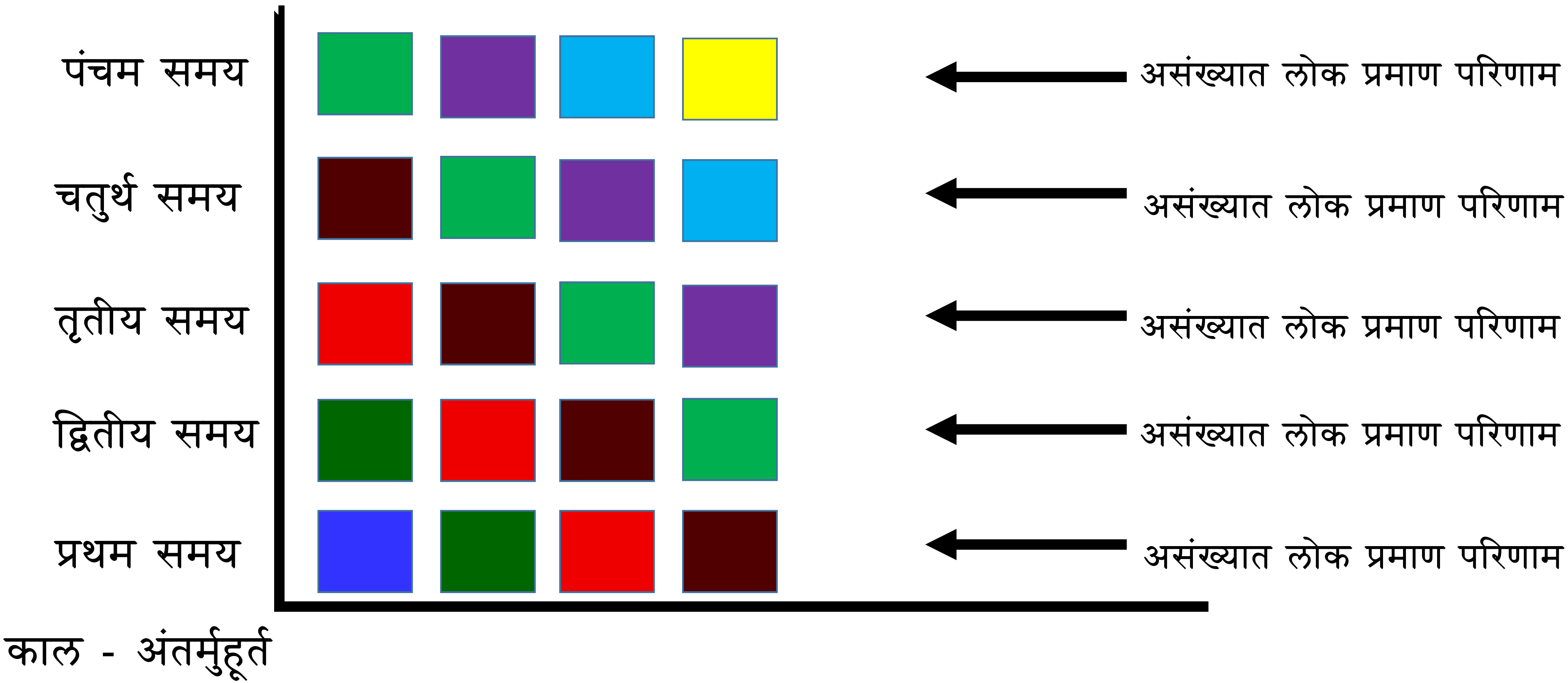
पंचम समय
चतुर्थ समय
तृतीय समय
द्वितीय समय
प्रथम समय
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम
असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम
काल - अंतर्मुहूर्त

•

अनुकृष्टि रचना

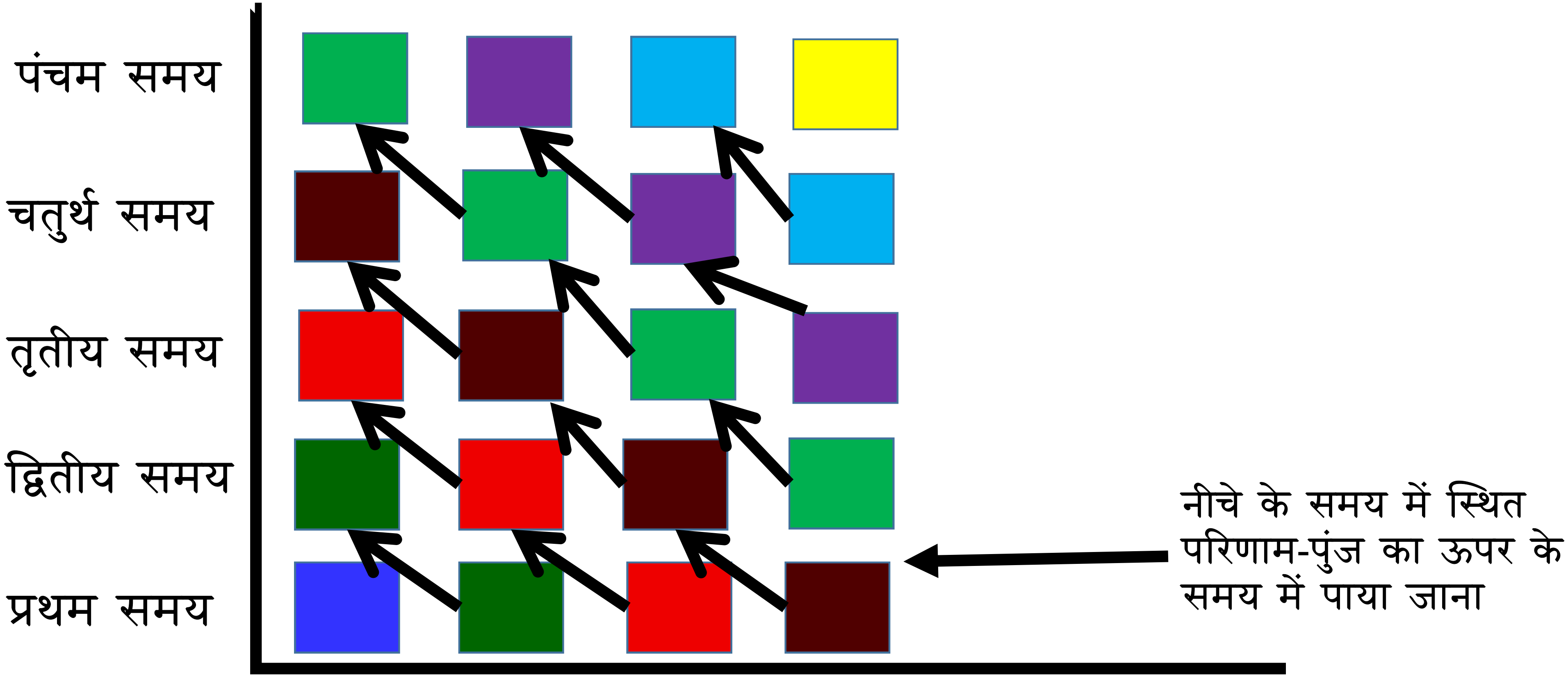

काल - अंतर्मुहूर्त

4	174	42	43	44	45
		(121-162)	(163-205)	(206-249)	(246-294)
3	170	41	42	43	44
		(80-120)	(121-162)	(163-205)	(206-249)
2	166	40	41	42	43
		(40-79)	(80-120)	(121-162)	(163-205)
1	162	39	40	41	42
		(1-39)	(40-79)	(80-120)	(121-162)
समय	परिणामों की संख्या	अनुकृष्टि के खंड			

अनुकृष्टि खंडों के परिणाम

- सबसे जघन्य खण्ड व उत्कृष्ट खण्ड सर्वथा असमान हैं ।
- एक खंड के जघन्य से उसी खण्ड का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणी विशुद्धता लिए है ।
- खंड के उत्कृष्ट से अगले खण्ड का जघन्य परिणाम अनंत गुणी विशुद्धता लिए है ।

वास्तविक संख्याएं

- अध:प्रवृत्तकरण का काल अन्तर्मुहूर्त है अर्थात् असंख्यात समय
- कुल परिणामों की संख्या असंख्यात लोक प्रमाण है
- चय का प्रमाण भी असंख्यात लोक है
- एक-एक समय के परिणामों की संख्या भी असंख्यात लोक है

- अनुकृष्टि गच्छ अन्तर्मुहूर्त का संख्यातवा भाग होकर भी असंख्यात है
- अनुकृष्टि चय का प्रमाण भी असंख्यात लोक है
- एक-एक अनुकृष्टि खंड के परिणाम भी असंख्यात लोक हैं

अधःप्रवृत्तकरण के 4 आवश्यक

प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि बढ़ना

स्थितिबंधापसरण

पाप प्रकृतियों का अनुभागबंधापसरण

पुण्य प्रकृतियों का बढ़ता हुआ अनुभाग बंध

प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि

- जीव में होने वाला एकमात्र आवश्यक

शेष 3 आवश्यक कर्मों में होते हैं

- जीव के परिणामों के निमित्त से
- वह भी नवीन बंधने वाले कर्मों में

स्थितिबंधापसरण

- बंधने वाले समस्त कर्मों की स्थिति
  - हर अंतर्मुहूर्त में
    - घट-घट कर बंधती है

स्थितिबंधापसरण

उदाहरण- स्थिति बंध माना 100 वर्ष

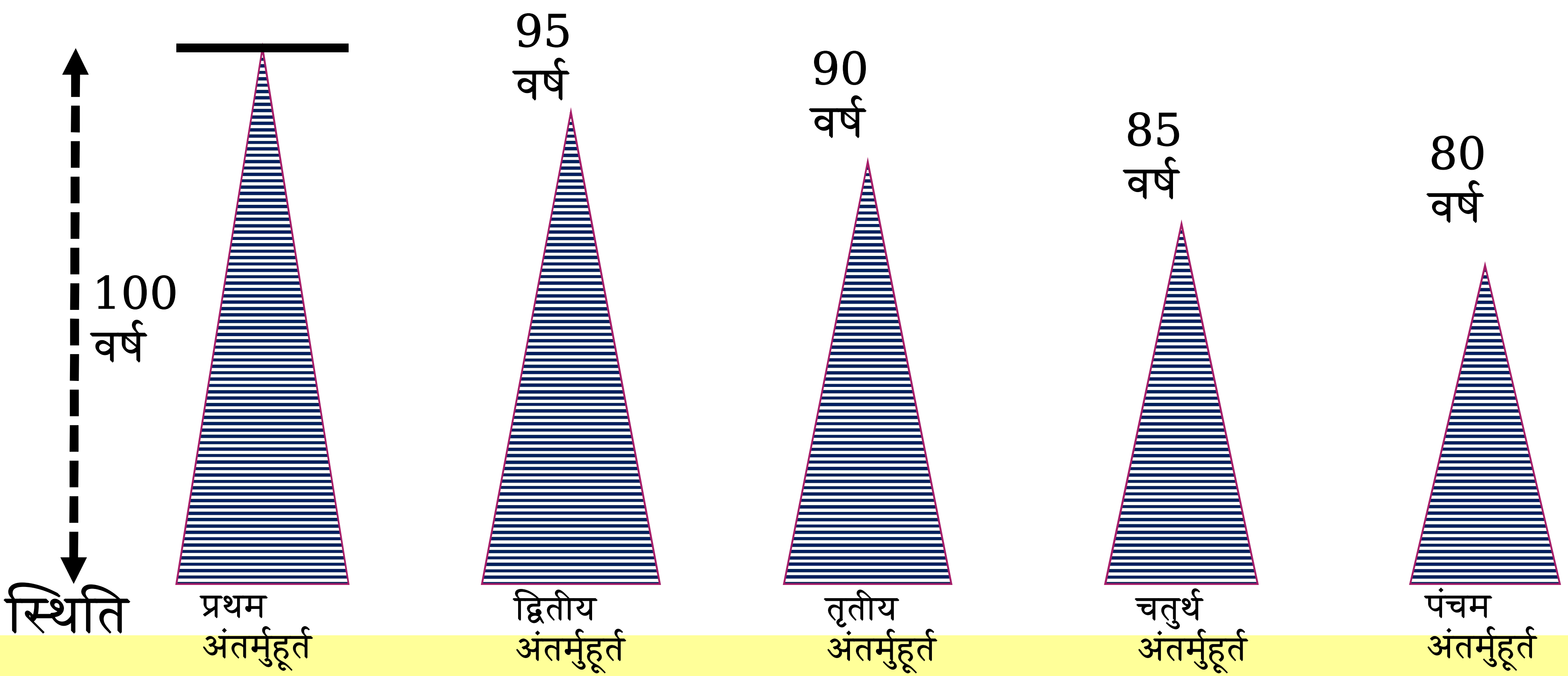

समस्त कर्मों का स्थिति-बंध क्यों घटता है? सिर्फ पाप प्रकृतियों का क्यों नहीं?

- क्योंकि 3 आयु को छोड़कर शेष सभी कर्मों की स्थिति पाप-रूप ही है

अनुभागबंधापसरण

- बंधने वाले पाप कर्मों का अनुभाग
- प्रतिसमय घट-घट कर बंधता है
- अनंतगुणा हीन - अनंतगुणा हीन होकर
- मात्र द्विस्थानीय बंध होता है

घाति कर्मों का चतुःस्थान अनुभाग बंध

नए बंधने वाले घाति कर्मों में इन दो स्थान का अनुभाग नहीं बंधता

अघाति कर्मों का चतु:स्थान अनुभाग बंध

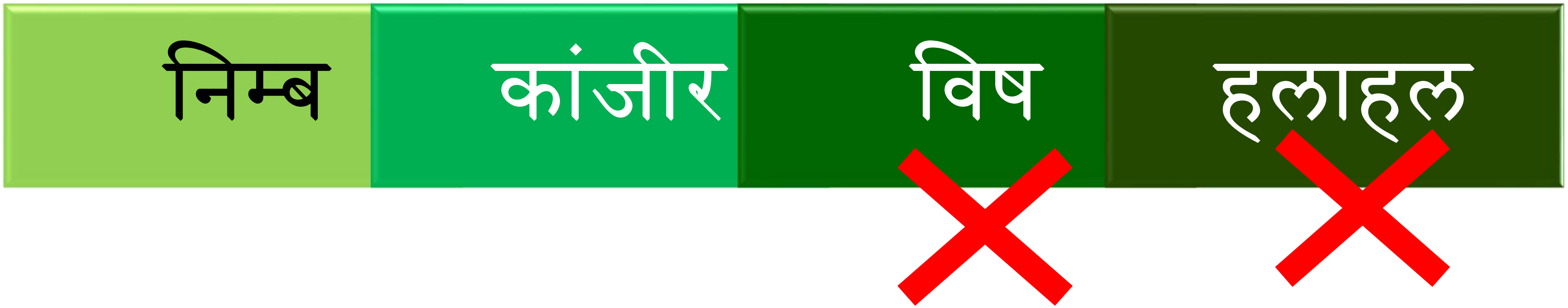

नए बंधने वाले अघाति कर्मों में इन
दो स्थान का अनुभाग नहीं बंधता

घाति कर्म →	लता	दारु
अघाति कर्म →	निम्ब	कांजीर

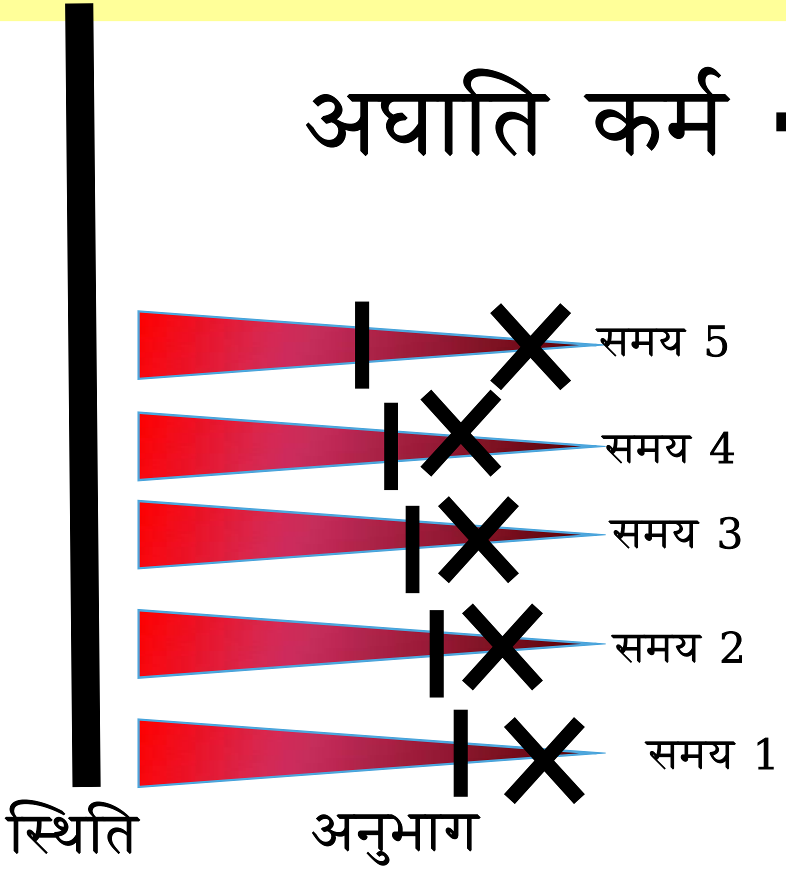

इन दो अनुभाग में भी प्रतिसमय अनंत गुणा हीन-हीन होकर अनुभाग बांधता है

पाप प्रकृतियों का नया अनुभाग बंध

अनुभाग बंध बढ़ना

बंधने वाले पुण्य कर्मों का अनुभाग

प्रतिसमय अधिक-अधिक बंधता है

अनंतगुणा अधिक - अनंतगुणा अधिक

चतु:स्थानीय बंध होता है

अघाति कर्मों का चतु:स्थान अनुभाग बंध

गुड़	खांड	शर्करा	अमृत

नए बंधने वाले अघाति कर्मों में पुण्य प्रकृति का चतु:स्थानीय अनुभाग बंध होता है

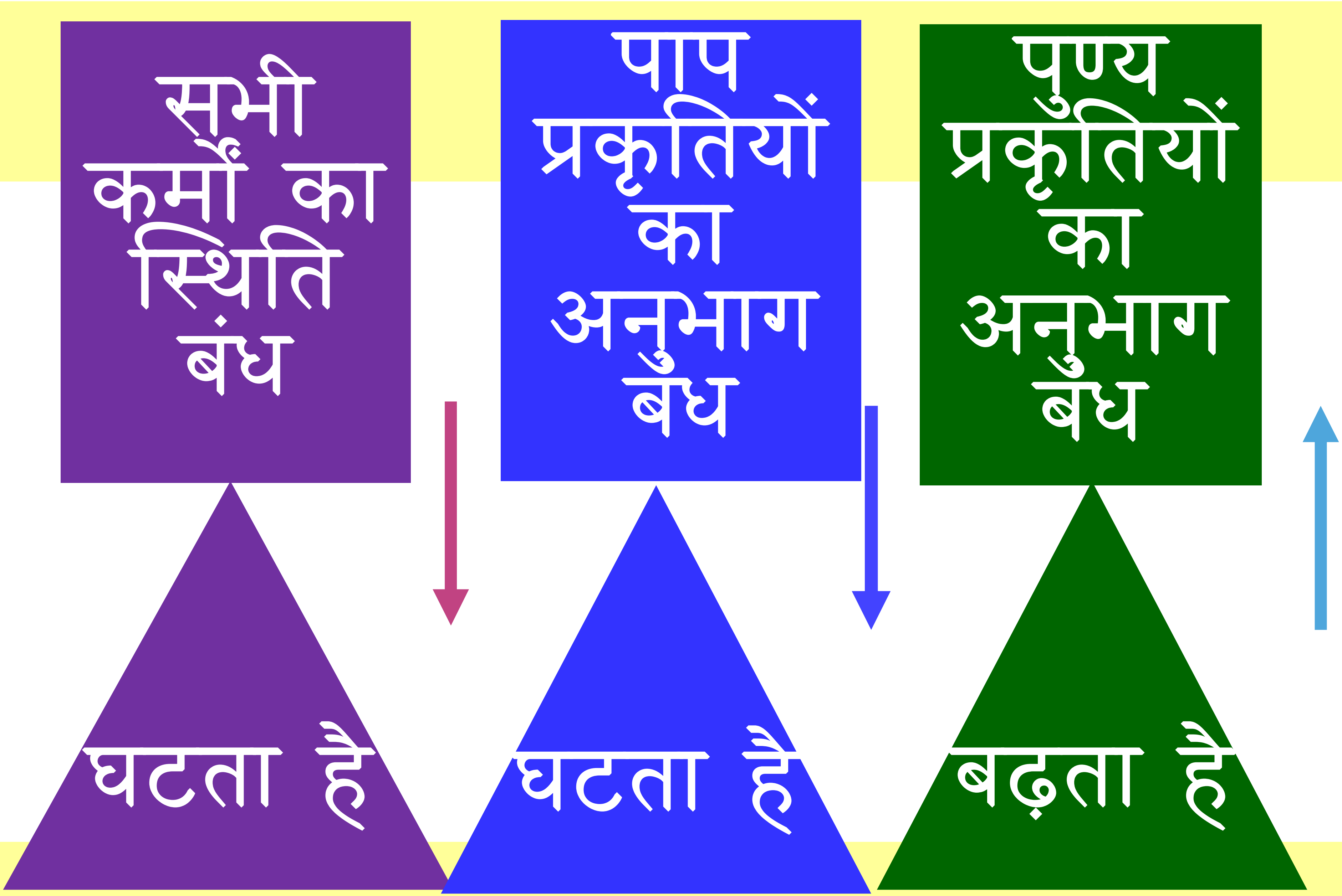
सभी कर्मों का स्थिति बंध
घटता है
पाप प्रकृतियों का अनुभाग बँध
घटता है
पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग बँध
बढ़ता है

ये चार आवश्यक कब तक होते हैं?

प्रारंभ-

- अधःप्रवृत्तकरण के प्रथम समय से

अंत-

- जब तक बंध है अर्थात् 10वें के अंत तक

अंतोमुहुत्तकालं, गमिऊण अधापवत्तकरणं तं।
पडिसमयं सुज्झंतो, अपुव्वकरणं समल्लियइ॥50॥

अर्थ - जिसका अन्तर्मुहूर्त मात्र काल है, ऐसे अधःप्रवृत्तकरण को बिताकर वह सातिशय अप्रमत्त जब प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि को लिए हुए अपूर्वकरण जाति के परिणामों को करता है, तब उसको अपूर्वकरणनामक अष्टमगुणस्थानवर्ती कहते हैं ॥50॥

एदह्मि गुणट्ठाणे, विसरिससमयट्ठियेहिं जीवेहिं।
पुव्वमपत्ता जह्मा, होंति अपुव्वा हु परिणामा॥51॥

अर्थ - इस गुणस्थान में भिन्नसमयवर्ती जीव, जो पूर्व समय में कभी भी प्राप्त नहीं हुए थे ऐसे अपूर्व परिणामों को ही धारण करते हैं, इसलिये इस गुणस्थान का नाम अपूर्वकरण है ॥51॥

भिण्णसमयट्ठियेहिं दु, जीवेहिं ण होदि सव्वदा सरिसो।
करणेहिं एक्कसमयट्ठियेहिं सरिसो विसरिसो वा॥52॥

अर्थ - यहाँ पर (अपूर्वकरण में) भिन्न समयवर्ती जीवों में विशुद्ध परिणामों की अपेक्षा कभी भी सादृश्य नहीं पाया जाता; किन्तु एक समयवर्ती जीवों में सादृश्य और विसादृश्य दोनों ही पाये जाते हैं ॥52॥

स्वरूप - अपूर्वकरण

भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम	भिन्न ही	
एक समयवर्ती जीवों के परिणाम	भिन्न भी	समान भी

अपूर्वकरण गुणस्थान

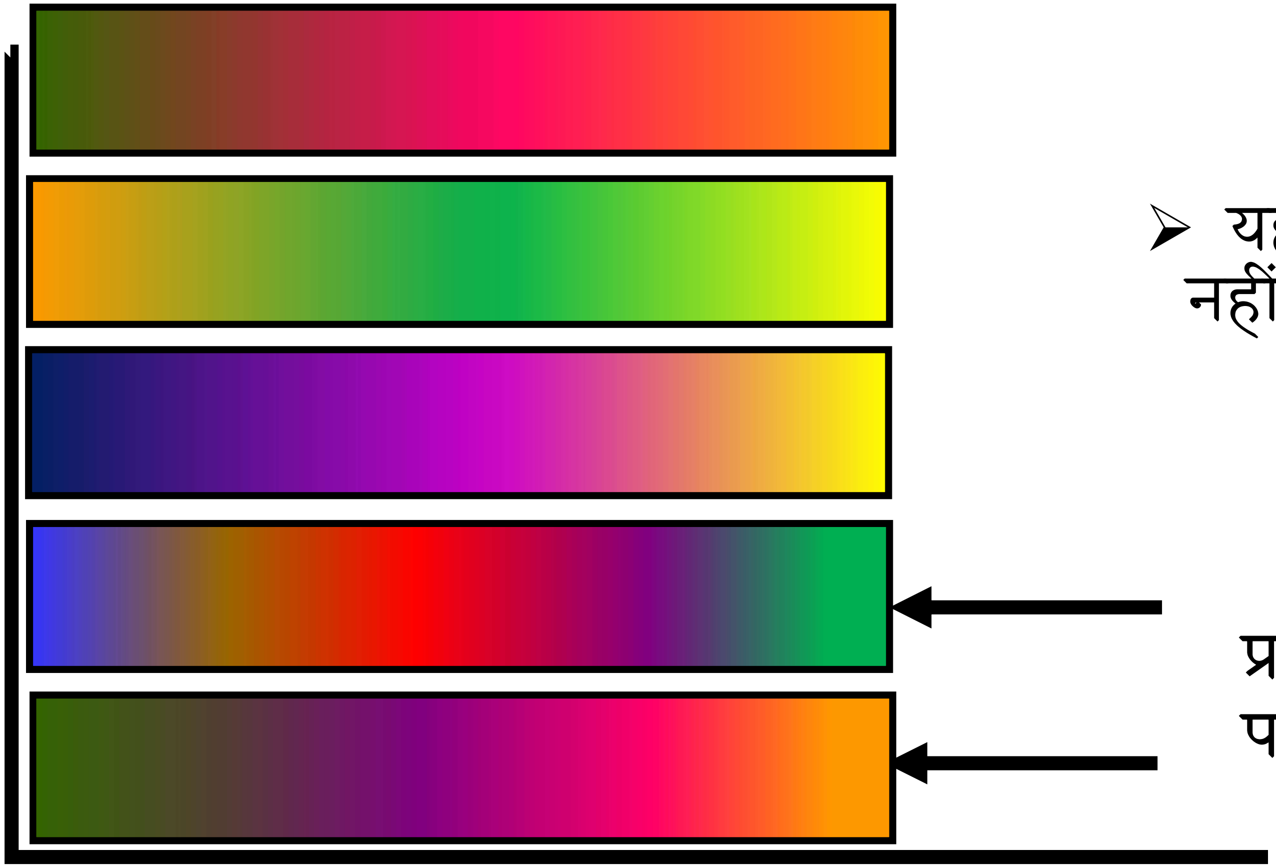

- यहाँ अनुकृष्टि रचना नहीं है ।

सर्वधन = 4096, गच्छ = 8, संख्यात = 4

पद	सूत्र	
चय	$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 x \text{ संख्यात}}$	$\frac{4096}{8 \times 8 \times 4} = 16$
चयधन	$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}$	$\frac{8 - 1}{2} \times 16 \times 8$ $= 7 \times 8 \times 8 = 448$
आदिधन	सर्वधन – चयधन	4096 – 448 = 3648
आदि	$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{3648}{8} = 456$

अपूर्वकरण के परिणामों की रचना (अंक संदृष्टि से)

समय	परिणामों की संख्या
8	568 (3529-4096)
7	552 (2977-3528)
6	536 (2441-2976)
5	520 (1921-2440)
4	504 (1417-1920)
3	488 (929-1416)
2	472 (457-928)
1	456 (1-456)

कुल परिणाम = 4096

समय = 8

चय = 16

अंतोमुहुत्तमेत्ते, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
कमउड्ढा पुव्वगुणे, अणुकट्टी णत्थि णियमेण॥53॥

- अर्थ - इस गुणस्थान का काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है और
- इसमें परिणाम असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं, और
- वे परिणाम उत्तरोत्तर प्रतिसमय समानवृद्धि को लिये हुए हैं तथा
- इस गुणस्थान में नियम से अनुकृष्टि रचना नहीं होती है ॥53॥

वास्तविक संख्याएं

- अपूर्वकरण का काल अन्तर्मुहूर्त है अर्थात् असंख्यात समय ।
- कुल परिणामों की संख्या असंख्यात लोक प्रमाण है ।
- चय का प्रमाण भी असंख्यात लोक है ।
- एक-एक समय के परिणामों की संख्या भी असंख्यात लोक है ।

परिणामों की विशुद्धि

- अपूर्वकरण के पहले समय का जघन्य परिणाम अध:प्रवृत्त करण के अन्तिम सर्वविशुद्ध परिणाम से भी अनन्तगुणा विशुद्ध है ।
- प्रत्येक समय के जघन्य परिणाम से उसी समय का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणी विशुद्धता लिए है ।
- एक समय के उत्कृष्ट परिणाम से अगले समय का जघन्य परिणाम भी अनंत गुणी विशुद्धता लिए है ।

अपूर्वकरण के 4 आवश्यक

1. गुणश्रेणी निर्जरा
2. गुण-संक्रमण
3. स्थिति-कांडक घात
4. अनुभाग-कांडक घात

ये सब कार्य सत्ता के कर्मों में होते हैं

गुणश्रेणी निर्जरा

- सत्ता में स्थित कर्मों की
- प्रतिसमय
- असंख्यात गुणाकार रूप से
- निर्जरा होना
- गुणश्रेणी निर्जरा कहलाता है

गुणश्रेणी का उदाहरण

- मानाकि अपकृष्ट द्रव्य = 8500, गुणश्रेणी आयाम = 4

	निषेक द्रव्य
चतुर्थ निषेक में दिया द्रव्य	6400
तृतीय निषेक में दिया द्रव्य	1600
द्वितीय निषेक में दिया द्रव्य	400
प्रथम निषेक में दिया द्रव्य	100
	8500

गुणश्रेणी निर्जरा

उदाहरण

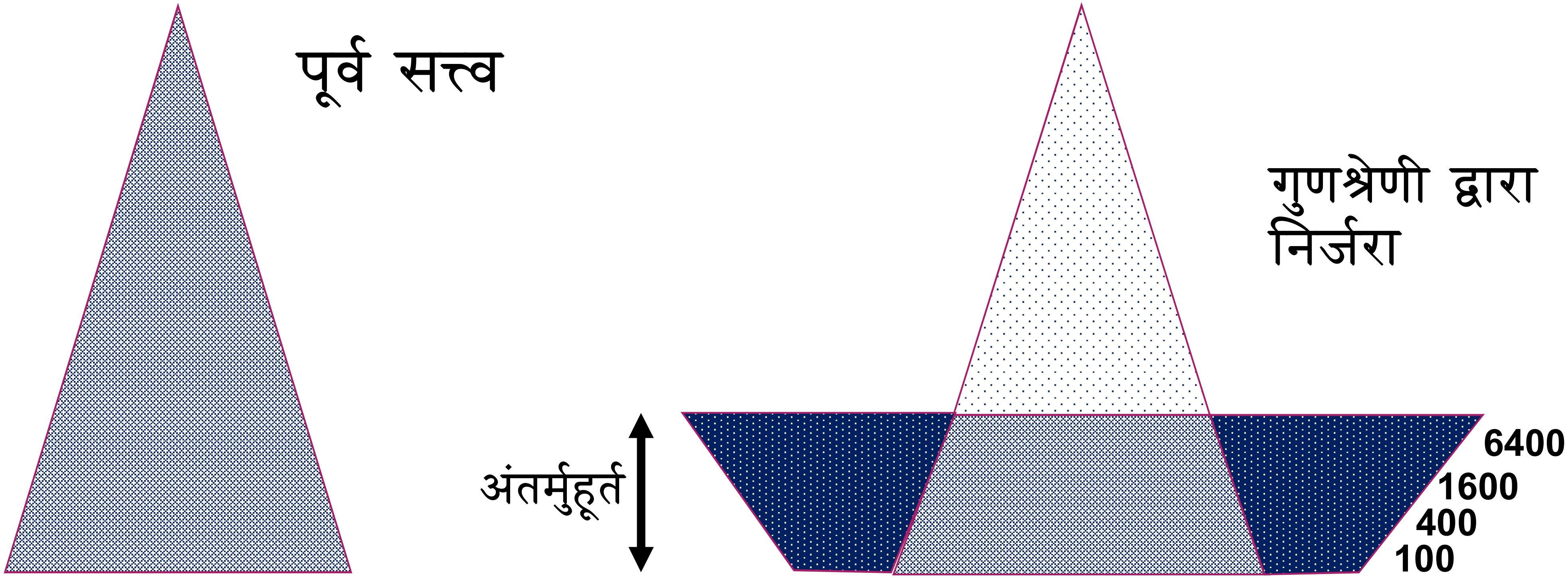

गुण-संक्रमण

- जिनका बंध नहीं हो रहा, सत्ता में स्थित ऐसी पाप प्रकृतियों का
- प्रतिसमय
- असंख्यात गुणा
- वर्तमान में बंधने वाली अन्य प्रकृति रूप होना
- गुण-संक्रमण कहलाता है

एक कर्म का अन्य कर्मरूप होना

↓

किन कर्मों का ?

↓

अप्रशस्त कर्मों का

↓

बंधने वालों का ?

↓

नहीं, सत्ता वर्ष के कर्मों का

↓

कब ?

↓

प्रतिसमय

↓

कितना ?

↓

पहले समय से अगले समय असंख्यातगुणा

संक्रमण नियम

मूल प्रकृतियों में परस्पर संक्रमण नहीं होता है

चारों आयुओं का आपस में संक्रमण नहीं होता है

मोहनीय के उत्तर भेद – दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय का आपस में संक्रमण नहीं होता है

दर्शन मोहनीय का दर्शन मोहनीय में और चारित्र मोहनीय का चारित्र मोहनीय के भेदों में आपस में संक्रमण हो सकता है

स्थितिकांडक घात

- सत्ता में स्थित
- समस्त कर्मों की स्थिति
- हर अंतर्मुहूर्त में नष्ट करना
- स्थितिकांडक घात कहलाता है

स्थितिकांडक घात कैसे होता है ?

- जितनी स्थिति नाश करनी है, अग्र भाग के उतने स्थिति के निषेकों को नीचे की स्थिति में दिया जाता है ।
- एक अंतर्मुहूर्त में सारे निषेकों को नीचे देकर ऊपर की स्थिति समाप्त हो जाती है ।

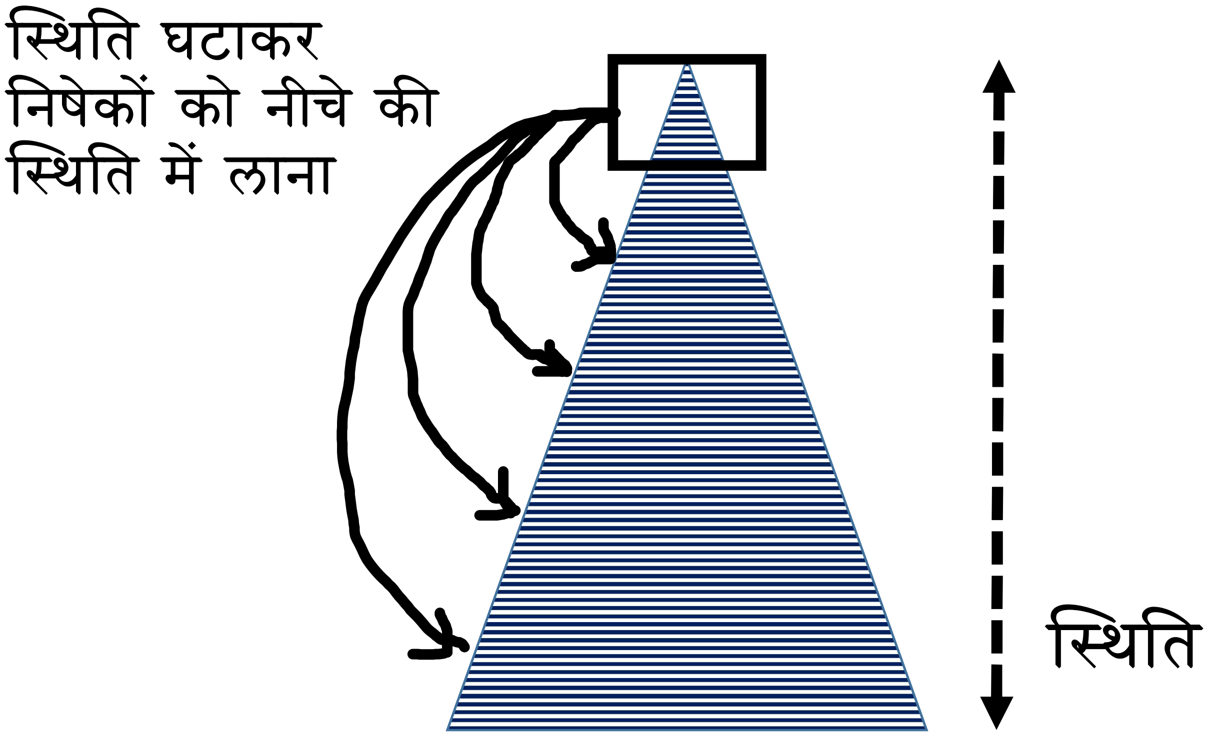

स्थिति काण्डकघात

उदाहरण- स्थिति सत्त्व माना 100 वर्ष

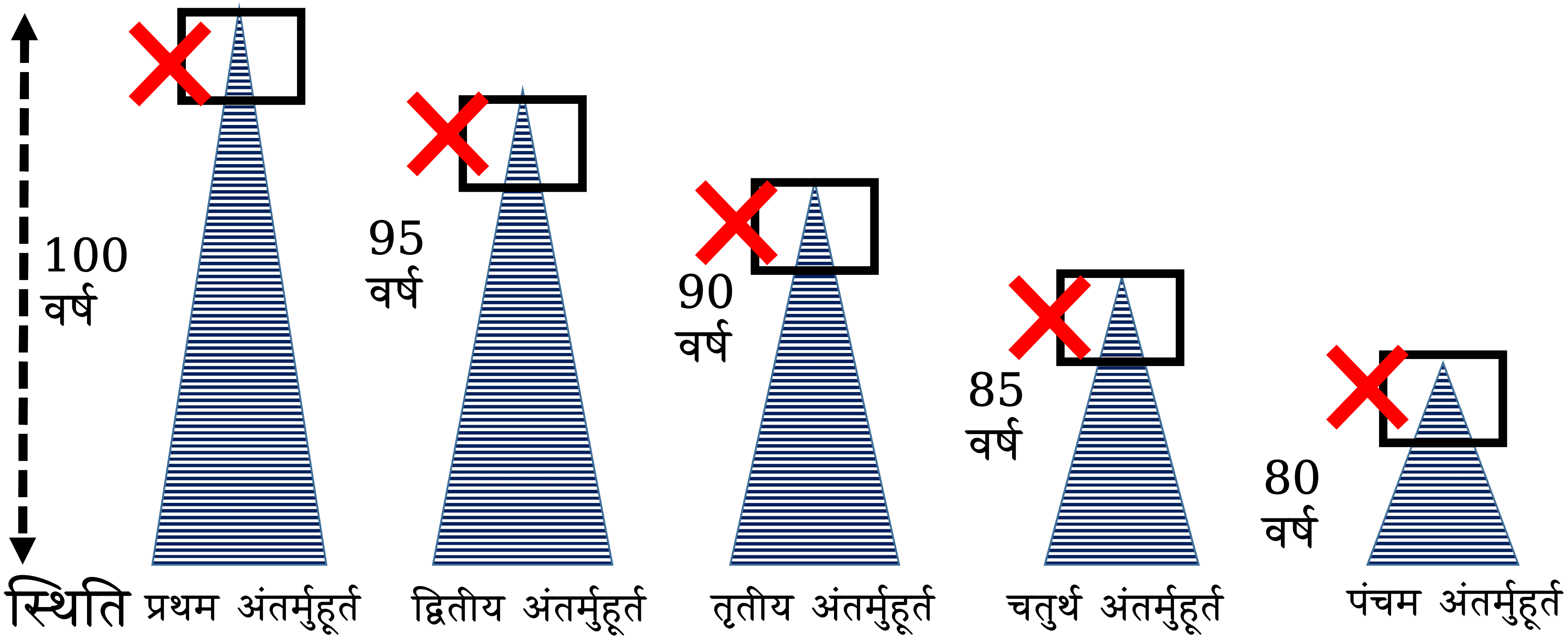

विशेष

- एक स्थितिखण्डन में अन्तर्मुहूर्त काल लगता है ।
- आयु को छोड़कर शेष सारे कर्मों की स्थिति का खण्डन (घात) किया जाता है ।
- एक करण में संख्यात हजार बार स्थितिकांडक घात होते हैं ।
- ऐसे स्थितिकांडक घात के द्वारा स्थिति-सत्त्व करण के आदि से अंत में संख्यात गुणा कम हो जाता है ।

अनुभाग कांडक घात

- सत्ता में स्थित
- पाप प्रकृतियों का अनुभाग
- हर अंतर्मुहूर्त में
- अनंत बहुभाग नष्ट करना
- अनुभागकांडक घात कहलाता है

अनुभागकांडक घात कैसे होता है ?

- जितने अनुभाग का नाश करना है, अग्र भाग के उतने अनुभाग के स्पर्धकों को हीन अनुभाग के स्पर्धकों में दिया जाता है ।

- एक अंतर्मुहूर्त में सारे स्पर्धकों को हीन अनुभाग में देने पर अधिक शक्ति वाले स्पर्धक समाप्त हो जाते हैं ।

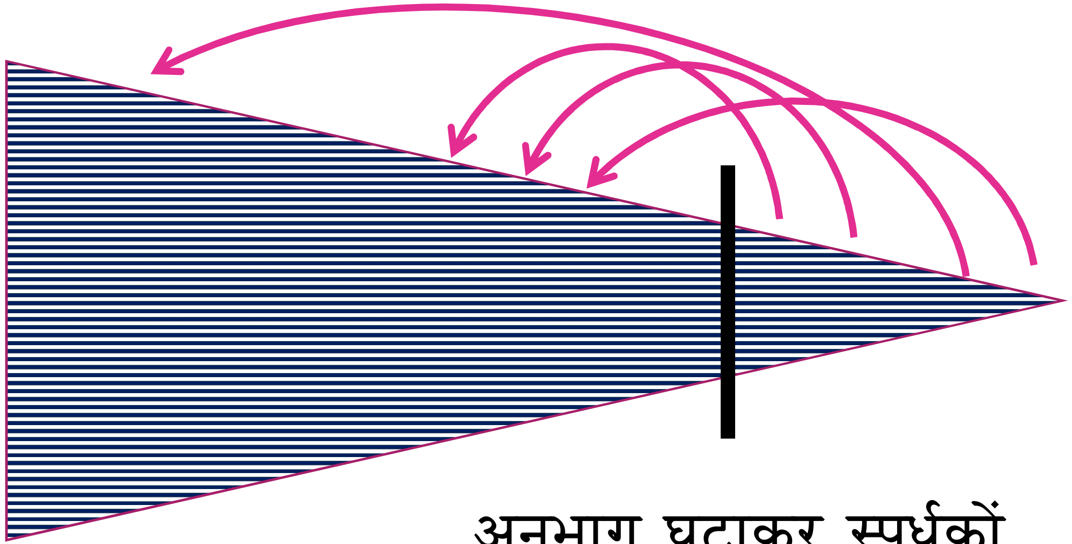

अनुभाग घटाकर स्पर्धकों को हीन शक्ति वाले स्पर्धकों में लाना

अनुभाग-काण्डक-घात

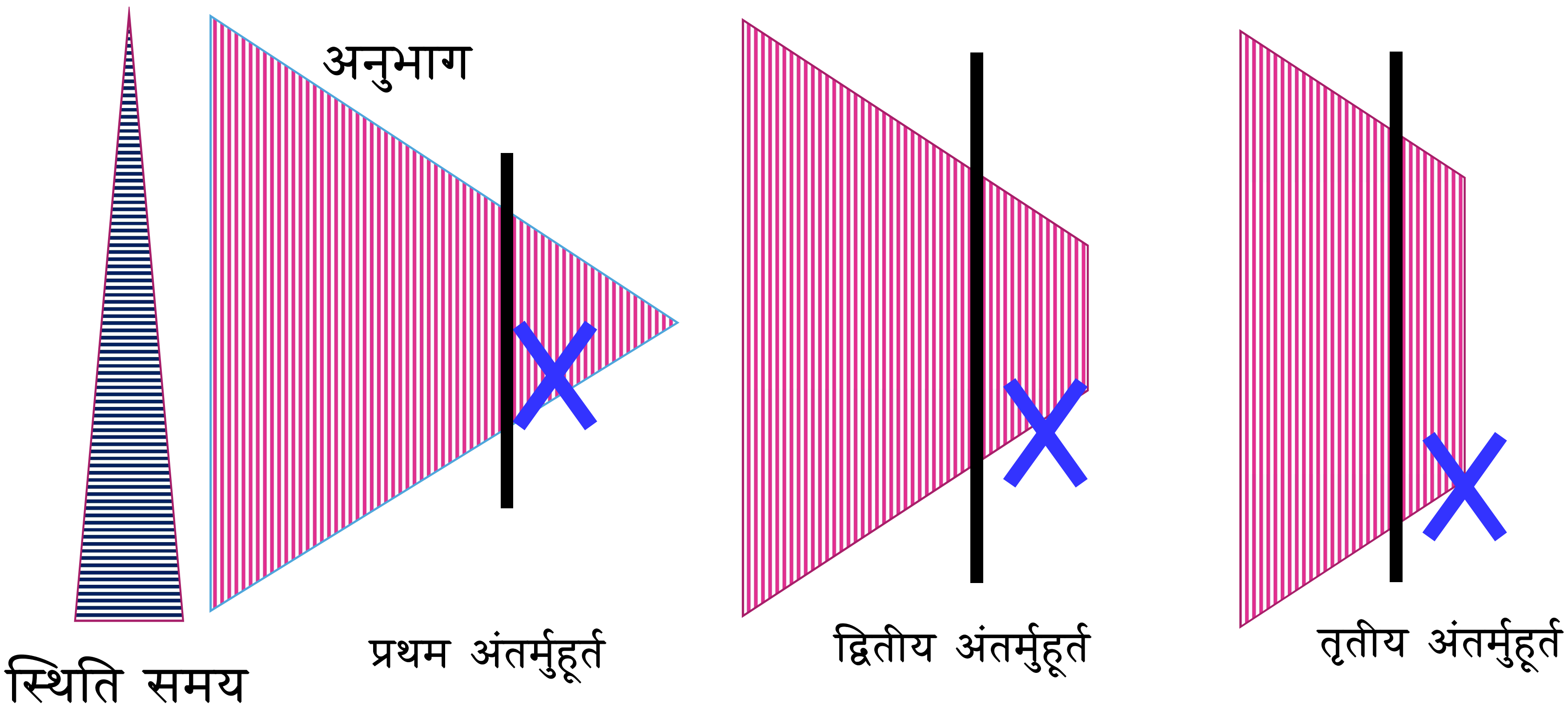

विशेष

- एक अनुभाग खण्डन में अन्तर्मुहूर्त काल लगता है ।
- सत्ता के सर्व अप्रशस्त कर्मों का अनुभाग घात होता है ।
- पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग नहीं घटता है ।

- गुणश्रेणी निर्जरा
  - प्रदेशों की
  - क्षेत्र
- गुण संक्रमण
  - प्रकृति का
  - द्रव्य
- स्थिति खंडन
  - स्थिति का
  - काल
- अनुभाग खंडन
  - अनुभाग का
  - भाव

तारिसपरिणामट्ठियजीवा हु जिणेहिं गलियतिमिरेहिं।
मोहस्सपुव्वकरणा, खवणुवसमणुज्ञया भणिया॥54॥

अर्थ - अज्ञान अन्धकार से सर्वथा रहित जिनेन्द्रदेव ने कहा है कि उक्त परिणामों को धारण करने वाले अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीव मोहनीयकर्म की शेष प्रकृतियों का क्षपण अथवा उपशमन करने में उद्यत होते हैं ॥54॥

णिद्दापयले णट्ठे, सदि आऊ उवसमंति उवसमया।
खवयं ढुक्के खवया, णियमेण खवंति मोहं तु॥55॥

अर्थ - जिनके निद्रा और प्रचला की बंधव्युच्छित्ति हो चुकी है तथा जिनका आयुकर्म अभी विद्यमान है, ऐसे उपशमश्रेणी का आरोहण करने वाले जीव शेष मोहनीय का उपशमन करते हैं और जो क्षपकश्रेणी का आरोहण करने वाले हैं, वे नियम से मोहनीय का क्षपण करते हैं ॥55॥

श्रेणी में मरण सम्बन्धी नियम

उपशम श्रेणी		क्षपक श्रेणी
अपूर्वकरण के प्रथम भाग में मरण नहीं	शेष काल में मरण संभव है	सर्वत्र मरण संभव नहीं

एकह्मि कालसमये, संठाणादीहिं जह णिवट्टंति।
ण णिवट्टंति तहावि य, परिणामेहिं मिहो जेहिं॥56॥
होंति अणियट्टिणो ते, पडिसमयं जेस्सिमेक्कपरिणामा।
विमलयरझाणहुयवह-सिहाहिं णिद्दड्ढ कम्मवणा॥57॥

अर्थ - अन्तर्मुहूर्तमात्र अनिवृत्तिकरण के काल में से आदि या मध्य या अन्त के एक समयवर्ती अनेक जीवों में जिसप्रकार शरीर की अवगाहना आदि बाह्य करणों से तथा ज्ञानावरणादिक कर्म के क्षयोपशमादि अन्तरम करणों से परस्पर में भेद पाया जाता है, उसप्रकार जिन परिणामों के निमित्त से परस्पर में भेद नहीं पाया जाता उनको अनिवृत्तिकरण कहते हैं। अनिवृत्तिकरण गुणस्थान का जितना काल है, उतने ही उसके परिणाम हैं इसलिये उसके काल के प्रत्येक समय में अनिवृत्तिकरण का एक ही परिणाम होता है तथा ये परिणाम अत्यन्त निर्मल ध्यानरूप अग्नि की शिखाओं की सहायता से कर्मवन को भस्म कर देते हैं ॥56-57॥

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

अ + निवृत्ति + करण

विद्यमान नहीं है + भेद + विशुद्ध परिणामों में

वह अनिवृत्तिकरण है ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विशेष:

- शरीर का संस्थान, वर्ण, वय तथा उपयोगादि में भेद संभव है ।
- यहाँ प्रत्येक समय सभी जीवों के एक जैसा, एक ही परिणाम संभव है ।
- इसका काल अन्तर्मुहूर्त है ।

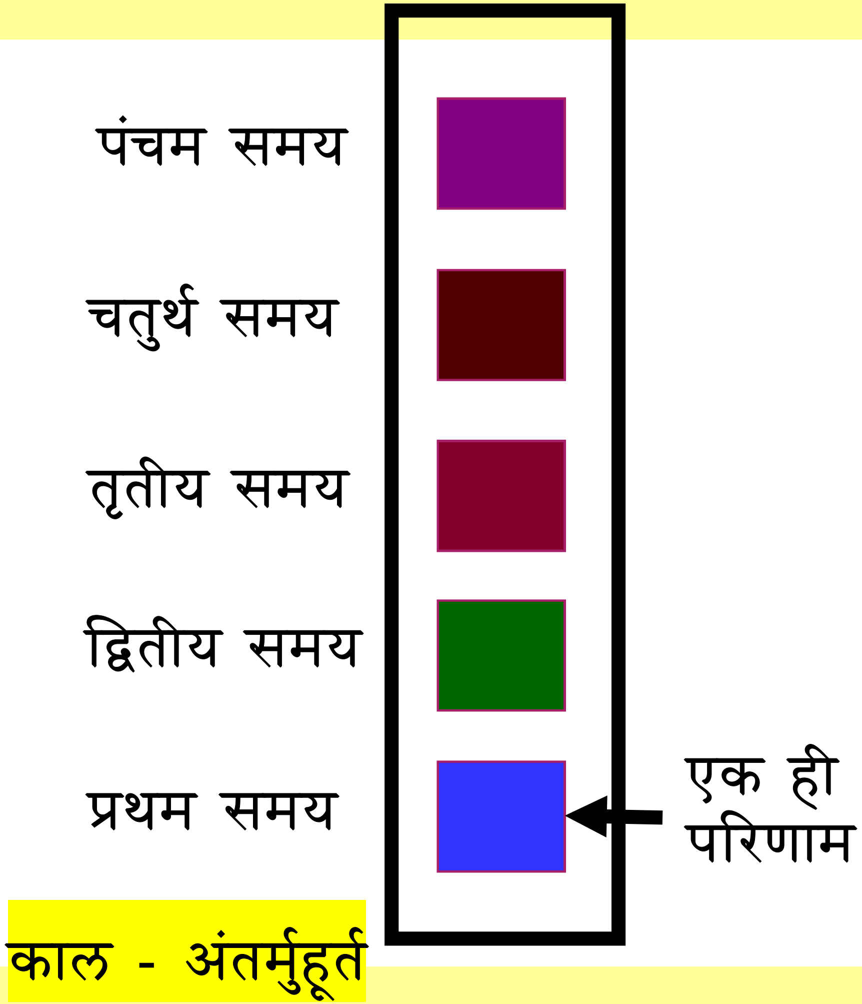

अनिवृत्तिकरण के आवश्यक

क्षपक श्रेणी में

- 20 प्रकृतियों का क्षय
- 10वें गुणस्थान में भोगने के लिये संज्वलन लोभ की सूक्ष्म कृष्टी

उपशम श्रेणी

- 11वें गुणस्थान के लिये 21 प्रकृतियों का अंतरकरणरूप उपशम
- चढ़ने और उतरने के 10वें गुणस्थान में भोगने के लिए संज्वलन लोभ की सूक्ष्म कृष्टी

	अध:प्रवृत्तकरण	अपूर्वकरण	अनिवृत्तिकरण
परिणाम	ऊपर समय वाले जीवों के परिणाम नीचे समय वालों से मिलते हैं	प्रतिसमय अपूर्व (जो पहले न हुये हों) ऐसे नवीन परिणाम होते हैं	जहाँ संस्थानादि का भेद होने पर भी परिणामों में भेद नहीं
एक समयवर्ती जीवों के परिणाम	समान भी, भिन्न भी	समान भी, भिन्न भी	समान ही
भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम	समान भी, भिन्न भी	भिन्न ही	भिन्न ही
अनुकृष्टि रचना	होती है	नहीं होती है	नहीं होती है
परिणामों की संख्या	असंख्यात लोकप्रमाण (ऊपर—2 समान वृद्धि सहित)	असंख्यात लोकप्रमाण (अध:प्रवृत्तकरण से असंख्यातगुणे)	असंख्यात—जितने इसके समय
काल तीनों का अंतर्मुहूर्त	सबसे बड़ा	अध:प्रवृत्तकरण से संख्यात गुणा हीन	अपूर्वकरण से संख्यात गुणा हीन
उदाहरण	16 समय	8 समय	4 समय

ये करण के परिणाम और कहाँ-कहाँ होते हैं?

क्रं.	पद	गुणस्थान
1	प्रथमोपशम सम्यक्त्व	१
2	अनंतानुबंधी की विसंयोजना	४ से ७
3	क्षायिक सम्यक्त्व	४ से ७
4	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	७
5	उपशम श्रेणी	७, ८, ९
6	क्षपक श्रेणी	७, ८, ९

धुदकोसुंभयवत्थं, होहि जहा सुहमरायसंजुत्तं।
एवं सुहमकसाओ, सुहमसरागोत्ति णादव्वो॥58॥

- अर्थ - जिस प्रकार धुले हुए कौसुंभी वस्त्र में लालिमा - सुर्खी सूक्ष्म रह जाती है, उसी प्रकार जो जीव अत्यन्त सूक्ष्म राग-लोभ कषाय से युक्त है उसको सूक्ष्मसाम्पराय नामक दशम गुणस्थानवर्ती कहते हैं ॥58॥

सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान

निमित्त	परिणाम	उदाहरण
सूक्ष्म संज्वलन लोभ का उदय	अत्यंत सूक्ष्म राग (लोभकषाय) से संयुक्त	धुले हुए कौसुंभी वस्त्र के समान सूक्ष्म लालिमा

पुव्वापुव्वप्फड्डय-बादरसुहमगयकिट्टि अणुभागा।
हीणकमाणंतगुणेण-वरादु वरं च हेट्ठस्स॥59॥

अर्थ - पूर्वस्पर्धक से अपूर्वस्पर्धक के और अपूर्वस्पर्धक से बादरकृष्टि के तथा बादरकृष्टि से सूक्ष्मकृष्टि के अनुभाग क्रम से अनंतगुणे-अनंतगुणे हीन हैं। और ऊपर के (पूर्व-पूर्व के) जघन्य से नीचे का (उत्तरोत्तर का) उत्कृष्ट और अपने-अपने उत्कृष्ट से अपना-अपना जघन्य अनंतगुणा अनंतगुणा हीन है ॥59॥

पूर्व और अपूर्व स्पर्धक में अन्तर

	पूर्व स्पर्धक	अपूर्व स्पर्धक
स्वरूप	संसार-अवस्था में पाए जाने वाले कर्म की शक्ति समूहरूप	अनिवृत्तिकरण परिणामों से किए गए पूर्व स्पर्धक के अनंतवें भाग प्रमाण

कृष्टि

अनुभाग का कृष करना (घटाना)

स्पर्धक व कृष्टि में अन्तर

- एक स्पर्धक से दूसरे स्पर्धक का अनुभाग थोड़ा ही अधिक है,
- जबकि एक कृष्टि से दूसरी कृष्टि का अनुभाग अनन्त गुणा है ।

अनुभाग का क्रम

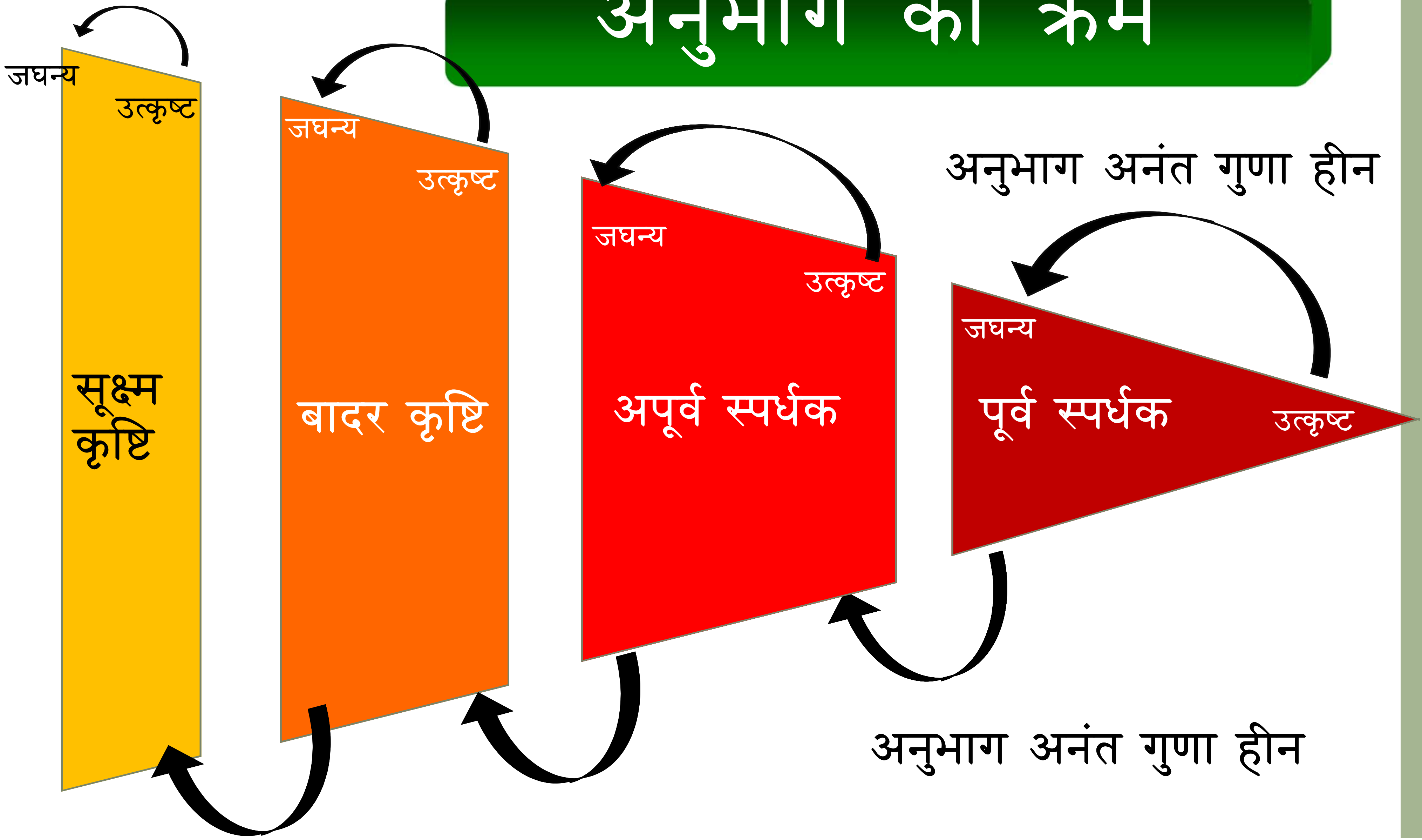
जघन्य
उत्कृष्ट
सूक्ष्म कृष्टि
जघन्य
उत्कृष्ट
बादर कृष्टि
जघन्य
उत्कृष्ट
अपूर्व स्पर्धक
अनुभाग अनंत गुणा हीन
जघन्य
पूर्व स्पर्धक
उत्कृष्ट
अनुभाग अनंत गुणा हीन

अपूर्व स्पर्धक	कषाय-नोकषाय सभी के होते हैं
बादर कृष्टी	संज्वलन क्रोध, मान, माया लोभ की होती है
सूक्ष्म कृष्टी	सिर्फ संज्वलन लोभ की होती है

उपशम श्रेणी में सूक्ष्म कृष्टि ही होती है, अपूर्व स्पर्धक और बादर कृष्टि नहीं की जाती ।

अणुलोहं वेदंतो, जीवो उवसामगो व खवगो वा।
सो सुहमसांपराओ, जहखादेणूणओ किं चि॥60॥

अर्थ - चाहे उपशम श्रेणी का आरोहण करनेवाला हो अथवा क्षपकश्रेणी का आरोहण करनेवाला हो, परन्तु जो जीव सूक्ष्मलोभ के उदय का अनुभव कर रहा है, ऐसा दशवें गुणस्थानवाला जीव यथाख्यात चारित्र से कुछ ही न्यून रहता है ॥60॥

6 से 10 गुणस्थान में संज्वलन का उदय कैसा ?

गुणस्थान	संज्वलन का उदय
6	तीव्र
7	मंद
8	मंदतर
9	मंदतम
10	सूक्ष्म

चारित्र की वृद्धि

सामायिक, छेदोपस्थापना चारित्र

इससे अधिक →

सूक्ष्म सांपराय चारित्र

इससे अधिक →

यथाख्यात चारित्र

कदकफलजुदजलं वा, सरए सरवाणियं व णिम्मलयं।
सयलोवसंतमोहो, उवसंतकसायओ होदि॥61॥

अर्थ - निर्मली फल से युक्त जल की तरह, अथवा शरद ऋतु में ऊपर से स्वच्छ हो जाने वाले सरोवर के जल की तरह, सम्पूर्ण मोहनीय कर्म के उपशम से उत्पन्न होने वाले निर्मल परिणामों को उपशान्तकषाय नामक ग्यारहवाँ गुणस्थान कहते हैं ॥61॥

उपशान्तकषाय गुणस्थान

निमित्त

सर्व मोहनीय कर्म का उपशम

परिणाम

पूर्ण वीतराग निर्मल दशा

उदाहरण

1. निर्मली फल से सहित स्वच्छ जल
2. शरद-कालीन सरोवर का जल

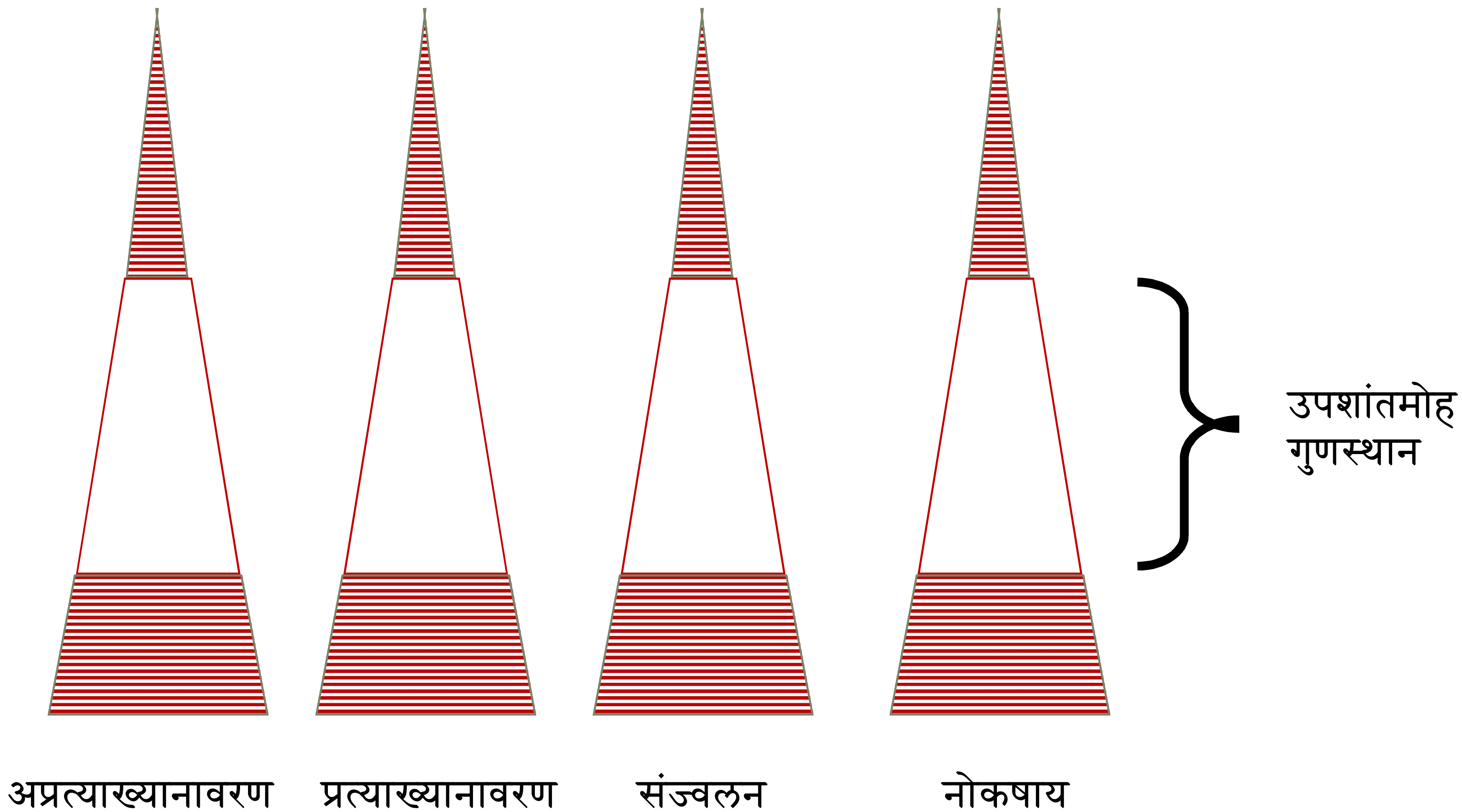
उपशांतमोह
गुणस्थान
अप्रत्याख्यानावरण
प्रत्याख्यानावरण
संज्वलन
नोकषाय

पतन के कारण

- कालक्षय
  - नियम से दसवाँ गुणस्थान
- भवक्षय
  - नियम से देवगति – चौथा गुणस्थान

णिस्सेसखीणमोहो, फलिहामलभायणुदयसमचित्तो।
खीणकसाओ भण्णदि, णिग्गंथो वीयरायेहिं॥62॥

अर्थ - जिस निर्ग्रन्थ का चित्त मोहनीय कर्म के सर्वथा क्षीण हो जाने से स्फटिक के निर्मल पात्र में रखे हुए जल के समान निर्मल हो गया है उसको वीतराग देव ने क्षीणकषाय नाम का बारहवें गुणस्थानवर्ती कहा है ॥62॥

क्षीणकषाय गुणस्थान

निमित्त

सर्व मोहनीय कर्म का क्षय

परिणाम

अत्यंत निर्मल वीतरागी परिणाम

उदाहरण

स्फटिक मणि के पात्र में रखा निर्मल जल

केवलणाणदिवायरकिरण-कलावप्पणासियण्णाणो।
णवकेवललद्धुग्गम, सुजणियपरमप्पववएसो॥63॥
असहायणाणदंसणसहिओ इदि केवली हु जोगेण।
जुत्तो ति सजोगजिणो, अणाइणिहणारिसे उत्तो॥64॥

अर्थ - जिसका केवलज्ञानरूपी सूर्य की अविभागप्रतिच्छेदरूप किरणों के समूह से (उत्कृष्ट अनंतानन्त प्रमाण) अज्ञान-अन्धकार सर्वथा नष्ट हो गया हो और जिसको नव केवललब्धियों के (क्षायिक-सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य) प्रकट होने से 'परमात्मा' यह व्यपदेश (संज्ञा) प्राप्त हो गया है, वह इन्द्रिय-आलोक आदि की अपेक्षा न रखने वाले ज्ञान-दर्शन से युक्त होने के कारण केवली और योग से युक्त रहने के कारण सयोग तथा घाति कर्मों से रहित होने के कारण जिन कहा जाता है, ऐसा अनादिनिधन आर्ष आगम में कहा है ॥63-64॥

परार्थरूप संपदा	स्वार्थरूप संपदा
• सूर्य की किरणों के समूह समान केवलज्ञान के द्वारा दिव्यध्वनि से पदार्थ प्रकाशित कर शिष्यों के अज्ञान-अंधकार को नष्ट करते हैं	• नव केवल लब्धि सहित होने से परमात्मा हैं • क्षायिक सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य

सयोग-केवली-जिन

सयोग	केवली	जिन
• योग-सहित होने से	• असहाय (पर सहायरहित) ज्ञान-दर्शन होने से	• घाति कर्मों का समूल नाश करने से

सीलेसिं संपत्तो, णिरुद्धणिस्सेसआसवो जीवो।
कम्मरयविप्पमुक्को, गयजोगो केवली होदि॥65॥

- अर्थ - जो अठारह हजार शील के भेदों का स्वामी हो चुका है और
- जिसके कर्मों के आने का द्वार रूप आस्रव सर्वथा बन्द हो गया है तथा
- सत्त्व और उदयरूप अवस्था को प्राप्त कर्मरूप रज की सर्वथा निर्जरा होने से उस कर्म से सर्वथा मुक्त होने के सम्मुख है,
- उस योगरहित केवली को चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोग-केवली कहते हैं ।

अयोग केवलीजिन

अठारह हजार शील के भेदों का स्वामी

सर्व आस्रव निरोधक

सत्त्व और उदय प्राप्त कर्मरज से मुक्त होने के सम्मुख

योगरहित

केवली

सम्मत्तुप्पत्तीये, सावयविरदे अणंतकम्मंसे।
दंसणमोहक्खवगे, कसायउवसामगे य उवसंते॥66॥
खवगे य खीणमोहे, जिणेसु दव्वा असंखगुणिदकमा।
तव्विवरीया काला, संखेज्जगुणक्कमा होंति॥67॥

अर्थ - सम्यक्त्वोत्पत्ति अर्थात् सातिशय मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि, श्रावक, विरत, अनंतानुबन्धी कर्म का विसंयोजन करनेवाला, दर्शनमोहनीय कर्म का क्षय करनेवाला, कषायों का उपशम करने वाले 8-9-10वें गुणस्थानवर्ती जीव, उपशान्तकषाय, कषायों का क्षपण करनेवाले 8-9-10वें गुणस्थानवर्ती जीव, क्षीणमोह, सयोगी और अयोगी दोनों प्रकार के जिन, इन ग्यारह स्थानों में द्रव्य की अपेक्षा कर्मों की निर्जरा क्रम से असंख्यातगुणी-असंख्यातगुणी अधिक-अधिक होती जाती है और उसका काल इससे विपरीत है। क्रम से उत्तरोत्तर संख्यातगुणा-संख्यातगुणा हीन है ॥66-67॥

गुणश्रेणी निर्जरा के स्थान

स्थान	स्वरूप	स्वामी (गुणस्थान अपेक्षा)
सातिशय मिथ्यादृष्टि	प्रथमोपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति के समय करण लब्धि के अंतिम समय में वर्तमान जीव	1
1. सम्यग्दृष्टि	अव्रती श्रावक	4
2. श्रावक	व्रती श्रावक	5
3. विरत	मुनि	6-7
4. अनंतानुबंधी वियोजक	अनंतानुबंधी को अप्रत्याख्यानावरण आदि रूप विसंयोजित करने वाला	4-7

स्थान	स्वरूप	स्वामी (गुणस्थान अपेक्षा)
5. दर्शनमोह क्षपक	दर्शनमोह का क्षय करने वाला	4-7
6. उपशामक	चारित्रमोह दबाने वाला	उपशम श्रेणी 8-10
7. उपशांत कषाय	चारित्रमोह दबने पर	11
8. क्षपक	चारित्रमोह को क्षय करने वाला	क्षपक श्रेणी 8-10
9. क्षीण मोह	चारित्रमोह के क्षय होने पर	12
10. स्वस्थान सयोगी जिन	घातिया कर्मों का क्षय करने के बाद योग-सहित	13
11. समुद्घातगत सयोगी जिन	समुद्घात अवस्था को प्राप्त सयोगकेवली जिन	13

उदाहरण

संख्यात का प्रमाण 2 माना, और असंख्यात का प्रमाण 5 माना			
	निर्जरा हेतु द्रव्य	बांटने योग्य आयाम	एक निषेक को प्राप्त औसत
1	10,000	2096	5
2	50,000	1024	50
3	2,50,000	512	500
4	12,50,000	256	5000
5	62,50,000	128	50000

प्रतिस्थान में द्रव्य असंख्यातगुणा बढ़ता है और
गुणश्रेणी आयाम का काल संख्यातगुणा हीन होता है ।

अट्ठविहकम्मवियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥68॥
सदसिव संखो मक्कडि, बुद्धो णेयाइयो य वेसेसी।
ईसरमंडलिदंसण,विदूसणट्ठं कयं एदं॥69॥

अर्थ - जो ज्ञानावरणादि अष्ट कर्मों से रहित हैं, अनंतसुखरूपी अमृत के अनुभव करनेवाले शान्तिमय हैं, नवीन कर्मबंध को कारणभूत मिथ्यादर्शनादि भावकर्मरूपी अञ्जन से रहित हैं, सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, वीर्य, अव्याबाध, अवगाहन, सूक्ष्मत्व, अगुरुलघु, ये आठ मुख्य गुण जिनके प्रकट हो चुके हैं, कृतकृत्य हैं, लोक के अग्रभाग में निवास करनेवाले हैं, उनको सिद्ध कहते हैं ॥68॥

अर्थ - सदाशिव, सांख्य, मस्करी, बौद्ध, नैयायिक और वैशेषिक, कर्तृवादी (ईश्वर को कर्त्ता मानने वाले), मण्डली इनके मतों का निराकरण करने के लिये ये विशेषण दिये हैं ॥69॥

सिद्धों के विशेषण एवं आठ मतों का खण्डन

विशेषण	किस मत का खण्डन	मत की मान्यता (जीव....	निराकरण
ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से रहित	सदाशिव	....सदा कर्म से रहित हैं	मुक्ति होने पर ही कर्म से रहित होता है
	मीमांसक	.... के मुक्ति नहीं	कर्मरहित होने पर मुक्ति होती है
सुख स्वरूप	सांख्यमत	....को मुक्ति में सुख नहीं	सर्व दु:खों का अभाव कर जीव ही मुक्ति में सुखी होता है
निरंजन (भाव कर्मों से रहित)	मस्करी संन्यासी	.... मुक्ति होने पर संसार में पुन: आते हैं	भाव कर्म के अभाव में नवीन द्रव्य कर्म नहीं होते । उसके अभाव में संसार नहीं होता

विशेषण	किस मत का खण्डन	मत की मान्यता (जीव....	निराकरण
नित्य	बौद्ध	.... क्षणिक है	सूक्ष्म अर्थपर्याय का उत्पादव्यय, परंतु द्रव्य सदा नित्य
आठ गुणों से सहित	नैयायिक वैशेषिक	.... को मुक्ति में बुद्धि आदि गुणों का विनाश होता है	अनंतानंत गुण प्रकट होते हैं
कृतकृत्य (कुछ करना शेष नहीं)	ईश्वर सृष्टिवाद	ईश्वर सृष्टि बनाता हैं	सकल कर्म नाश होने पर कुछ करना शेष नहीं रहता
लोक के अग्र भाग में स्थित	मण्डली	.... सदा ऊपर को गमन करता, कभी ठहरता नहीं	लोक के आगे धर्मास्तिकाय का अभाव होने से तनुवातवलय में स्थित रहता हैं

गुणस्थान : कुछ रोचक तथ्य

- ➢विग्रह गति में प्रथम, द्वितीय एवं चतुर्थ गुणस्थान ही होते हैं ।

- ➢तीसरे, बारहवें एवं तेरहवें गुणस्थान में जीव की मृत्यु नहीं होती ।
  - क्षपक श्रेणी के किसी भी गुणस्थान में मरण नहीं होता ।
  - उपशम श्रेणी के आठवें गुणस्थान के प्रथम भाग में भी मरण नहीं होता ।

- ➢संसार में पहला, चौथा, पाँचवाँ, छठवाँ, सातवाँ और तेरहवाँ इन गुणस्थानों में जीव सदा विद्यमान रहते ही हैं ।

- ➢बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ एवं क्षपकश्रेणी का आठवाँ, नौवाँ और दसवाँ ये गुणस्थान अप्रतिपाति हैं ।

- ➢जिसके नरक, तिर्यन्च और अगली मनुष्य-आयु की सत्ता हो वो अविरत सम्यक्त्व से उपर के गुणस्थानो में प्रवेश नहीं कर सकता ।

- ➢सासादन गुणस्थान में मरण हो तो जीव नरक में नहीं जाता |

गुण स्थानों में गमना गमन

13	14 अयोग केवली	सिद्ध भगवान
12	13 सयोग केवली	14
10	12 क्षीण मोह	13
10	11 उपशांत मोह	10, 4!
11, 9	10 सूक्ष्म साम्पराय	12, 11, 9, 4!
10, 8	9 अनिवृत्तिकरण	10, 8, 4!
9,7	8 अपूर्वकरण	9,7,4!
8,6,5,4,1	7 अप्रमत्तविरत	8,6,4!
7	6 प्रमत्तविरत	7,5,4,3,2,1
6,4,1	5 देशविरत	7,4,3,2,1
11, 10, 9, 8, 7, 6, 5, 4, 3, 1	4 अविरत सम्यक्त्व	7,5,3,2,1
6,5,4,1	3 मिश्र	1,4
6, 5, 4	2 सासादन	1
6, 5, 4, 3, 2	1 मिथ्यात्व	3*, 4, 5, 7

गुणस्थानों में काल अपेक्षा विचार

गुणस्थान	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल
1.मिथ्यात्व	अनादि अनंत या अनादि सांत या सादि सांत–कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन	अंतर्मुहूर्त
2.सासादन	छह आवली	एक समय
3.मिश्र	सर्वोत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त	सर्व लघु अंतर्मुहूर्त
4.अविरत	साधिक तैतीस सागर	अंतर्मुहूर्त
5.देशविरत	1 पूर्वकोटि वर्ष – 1 अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
6.प्रमत्तसंयत	एक अंतर्मुहूर्त	एक समय
7.अप्रमत्तसंयत	एक अंतर्मुहूर्त	एक समय

गुणस्थानों में काल अपेक्षा विचार

गुणस्थान	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल
8.अपूर्वकरण	एक अंतर्मुहूर्त	एक समय
9.अनिवृत्तिकरण	एक अंतर्मुहूर्त	एक समय
10.सूक्ष्मसाम्पराय	एक अंतर्मुहूर्त	एक समय
11.उपशान्तमोह	एक अंतर्मुहूर्त	एक समय
12.क्षीणमोह	जघन्य, उत्कृष्ट = अंतर्मुहूर्त	
13.सयोगकेवली	8 वर्ष और अन्तर्मुहूर्त कम 1 कोटि पूर्व	अंतर्मुहूर्त
14.अयोगकेवली	जघन्य, उत्कृष्ट = अ,इ,उ,ऋ,ऌ का उच्चारण काल	

समयप्रबद्ध का बटवारा - उदाहरण

- समयप्रबद्ध = 6300 परमाणु, स्थिति = 48
- गुणहानि आयाम = 8
- नाना गुणहानि $= \frac{\text{स्थिति}}{\text{गुणहानि आयाम}} = \frac{48}{8} = 6$
- अन्योन्याभ्यस्त राशि $= 2^{\text{नाना गुणहानि}} = 2^6 = 64$
- निषेकहार $= 2 \times$ गुणहानि आयाम

❁ अंतिम गुणहानि का द्रव्य $= \frac{\text{समयप्रबद्ध}}{\text{अन्योन्याभ्यस्त राशि} - 1}$

$$= \frac{6300}{64-1} = \frac{6300}{63} = 100$$

❁ पूर्व की गुणहानियों का द्रव्य इससे दुगुना-दुगुना है, अतः

पांचवी गुणहानि का द्रव्य	200
चतुर्थ गुणहानि का द्रव्य	400
तीसरी गुणहानि का द्रव्य	800
द्वितीय गुणहानि का द्रव्य	1600
प्रथम गुणहानि का द्रव्य	3200

प्रथम गुणहानि

- प्रथम निषेक $= \dfrac{\text{समयप्रबद्ध}}{\text{साधिक डेढ़ गुणहानि}} = \dfrac{\mathbf{6300}}{\mathbf{12\frac{39}{128}}} = 512$

- चय $= \dfrac{\text{प्रथम निषेक}}{\text{निषेकहार}} = \dfrac{\mathbf{512}}{\mathbf{16}} = 32$

- प्रथम निषेक से अगले निषेक एक-एक चय हीन हैं | अतः प्र
गुणहानि इस प्रकार प्राप्त होगी -

प्रथम गुणहानि
288
320
352
384
416
448
480
512

प्रथम गुणहानी के सर्व-द्रव्य का प्रमाण = 3200

द्वितीय गुणहानि

- प्रथम गुणहानि के अंतिम निषेक से एक चय और घटाने पर द्वितीय गुणहानि के प्रथम निषेक आता है |
- प्रथम गुणहानि से आगे-आगे की गुणहानियों में चय आधा-आधा होता जाता है |
- अतः द्वितीय गुणहानि इस प्रकार होगी →

द्वितीय गुणहानि
144
160
176
192
208
224
240
256

द्वितीय गुणहानी के सर्व-द्रव्य का प्रमाण = 1600

शेष गुणहानियां भी इसी प्रकार निकालना

1st गुणहानि	2nd गुणहानि	3rd गुणहानि	4th गुणहानि	5th गुणहानि	6th गुणहानि
288	144	72	36	18	9
320	160	80	40	20	10
352	176	88	44	22	11
384	192	96	48	24	12
416	208	104	52	26	13
448	224	112	56	28	14
480	240	120	60	30	15
512	256	128	64	32	16

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड रेखाचित्र एवं तालिकाओं में
- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 0731-2410880 , 94066-82889